प्रोत्साहन और आत्मविश्वास रचनात्मक लेखन के लिए ज़रूरी

विवेक सोनी

लेखन एक तरह का संवाद है जिसके ज़रिए बच्चे अपने अनुभव और विचारों को व्यक्त करते हैं। बच्चे यह लेखन रचनाशील तरीक़े से कर सकें, यह बहुत कुछ बच्चों के लेखन पर शिक्षक की प्रतिक्रिया पर निर्भर करता है। यदि शिक्षक की प्रतिक्रिया बच्चे के लेखन को सकारात्मक तरीक़े से आगे बढ़ाने वाली और प्रोत्साहन व आत्मविश्वास का माहौल रचने वाली होती है तब रचनात्मक लेखन के फलने-फूलने की सम्भावना कई गुना बढ़ जाती है।

विगत 15 वर्षों की अपनी स्कूल विज़िट के दौरान मैंने महसूस किया है कि बच्चों को लिखना सिखाने की प्रक्रिया में अकसर उन्हें ब्लैकबोर्ड या कॉपियों पर लिखे हुए की नक़ल करने या प्रश्नोत्तर लिखने के लिए कहा जाता है। इससे उनकी रचनात्मकता दब जाती है, और भविष्य में वह ख़ुद से सोचकर लिखने में चुनौती महसूस करते हैं। प्राथमिक कक्षाओं में यह भी देखने को मिलता है कि कक्षा में रचनात्मक लेखन के लिए बच्चों को पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाते हैं। शिक्षक अकसर बच्चों को लेखन में शुद्धता, व्याकरण और वर्तनी पर ध्यान देने के लिए कहते हैं। विगत महीनों के विभिन्न कक्षाओं के भाषा की दक्षताओं पर आधारित टूल के अध्ययन से पता चला है कि प्राथमिक से माध्यमिक स्तर के 40 से 50 प्रतिशत विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से लिखने में कठिनाई महसूस करते हैं।

चित्र 1: कहानी पढ़ने के बाद कहानी के बारे में अपने विचार लिखते विद्यार्थी

> **“मैंने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया कि वे डायरी लेखन को एक रचनात्मक और व्यक्तिगत प्रक्रिया मानें, न कि महज़ एक स्कूल असाइनमेंट।”**

यदि हम पिछले सालों में सरकार द्वारा आयोजित नेशनल अचीवमेंट सर्वे के आँकड़ों पर ग़ौर करते हैं तब यह आँकड़े भी इसी ओर इशारा करते दिखते हैं। उदाहरण के तौर पर, पाँचवीं कक्षा के एक विद्यार्थी को दो अलग-अलग विषयों पर कुछ वाक्यों को लिखना था। दोनों विषय विद्यार्थियों के अनुभव से जुड़ते हुए भी थे, लेकिन वह ख़ुद से सोचकर लिखने के इस अभ्यास को ठीक से नहीं कर पाए। इससे मुझे समझ में आया कि उन्हें अपनी कक्षाओं में रचनात्मक लेखन के अनुभव नहीं मिल पा रहे हैं। यह समस्या प्राथमिक स्तर से ही शुरू होती है तथा उच्च कक्षाओं में और गहरा जाती है। विद्यार्थियों को अपने विचारों को व्यवस्थित करने, और उन्हें प्रभावी ढंग से व्यक्त करने के लिए अभ्यास की ज़रूरत महसूस होती है। इसके लिए विद्यालयों में नियमित प्रयास की ज़रूरत है।

रचनात्मक लेखन के उद्देश्य

प्राथमिक स्तर पर विद्यालय आने वाले बच्चे अपनी कल्पना की दुनिया में खोए रहते हैं, और नए-नए विचारों को प्रकट करते हैं। वह अपनी भावनाओं को बिना किसी रोक-टोक के व्यक्त करते हैं और सीखने के प्रति गहरी उत्सुकता रखते हैं। अकसर उनकी इस कल्पना और उत्सुकता का ध्यान हम अपने शिक्षण के दौरान नहीं रख पाते हैं, इस कारण हमारा शिक्षण कार्य परम्परागत तरीक़ों से ही चलता रहता है। अगर इस समय लिखना सिखाने की प्रक्रिया में उनका सही ढंग से मार्गदर्शन किया जाए तो हम उन्हें बेहतर लेखक बना सकते हैं।

रचनात्मक लेखन का उद्देश्य बच्चों को सोचने के लिए प्रेरित करना, अपने अनुभवों को व्यवस्थित करना, और लेखन की पारम्परिक संरचनाओं से आगे बढ़कर कुछ नया सृजन करने के लिए प्रोत्साहित करना है। बच्चे चाहे दूसरी कक्षा में हों

या पाँचवीं में, उन्हें अपनी कल्पनाओं के लिए खुला छोड़ देना चाहिए। उन्हें अपनी रुचियों के बारे में लिखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, और विभिन्न लेखन शैलियों व विधाओं के साथ प्रयोग करने के अवसर देने चाहिए, फिर चाहे वह कहानी हो, कविता हो, या वास्तविक जीवन की घटनाओं पर आधारित लेखन।

रचनात्मक लेखन की प्रक्रिया

रचनात्मक लेखन वह प्रक्रिया है जिसमें लेखक अपनी कल्पना का उपयोग करके कहानी, कविता, नाटक या अन्य विधाओं में रचनात्मकता रूप से अपने विचारों को व्यक्त करता है। यह बच्चों के लिए अपनी कल्पनाओं और विचारों को नए और अनोखे तरीक़ों से व्यक्त करने का एक शानदार मौक़ा होता है। यह लेखन शुद्ध लिखने, व्याकरण या वर्तनी सुधारने के बारे में नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो आत्माभिव्यक्ति को बढ़ावा देती है, आत्मविश्वास का निर्माण करती है, और लेखन के प्रति रुचि को प्रेरित करती है।

रचनात्मक लेखन की रणनीतियाँ

बच्चों में रचनात्मक लेखन को बढ़ावा देने के लिए शिक्षकों को रचनात्मक लेखन की गतिविधियों से जुड़ी नई और विविधतापूर्ण रणनीतियों को अपनाने की आवश्यकता है। जैसे– बच्चों को कहानियाँ सुनाना, चित्रों के आधार पर कहानियाँ, कविताएँ, नाटक आदि लिखवाना। इसके साथ ही, विद्यालयों में पुस्तकालयों का विकास और पुस्तक प्रदर्शनी जैसे कार्यक्रमों का आयोजन भी बच्चों की रचनात्मकता को बढ़ावा देने में सहायक हो सकता है। रचनात्मक लेखन के दौरान पाठों में विद्यार्थियों को किसी विषय पर अपना दृष्टिकोण बताने के लिए भरपूर मौक़े प्रदान किए जाने की ज़रूरत महसूस होती है।

रचनात्मक लेखन : कक्षाओं के अनुभव

रचनात्मक लेखन बच्चों को महज़ शब्दों को काग़ज़ पर उतारने का अवसर नहीं देता, बल्कि यह उनकी कल्पनाओं, विचार और भावनाओं को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करने का एक अद्वितीय माध्यम भी बनता है। यह उनके मानसिक और भावनात्मक विकास में सहायक होता है।

कहानी लिखना

अपनी स्कूल विज़िट के दौरान मैंने कक्षाओं में रचनात्मक लेखन की गतिविधियों को आयोजित करने की कोशिश की तो बच्चों की प्रतिक्रियाएँ अविस्मरणीय थीं। कुछ कक्षाओं में, मैंने बच्चों को कहानियाँ लिखने के लिए प्रेरित किया जिनमें उन्हें अपनी पसन्दीदा जगह के बारे में विस्तार से लिखना था। शुरुआत में, बच्चों के लिए यह विचार करना कठिन था कि वह क्या लिखें। लेकिन जैसे-जैसे उन्होंने अपनी सोच को साझा करना शुरू किया, उनकी रचनात्मकता का स्तर देखकर मुझे काफ़ी सन्तुष्टि मिली। बच्चों ने अपने विचारों को दिलचस्प तरीक़े से व्यक्त किया। कुछ ने अपनी कल्पना से पूरी एक नई दुनिया बना दी, वहीं कुछ बच्चों ने अपनी पसन्दीदा जगहों का विस्तृत और मन को छूने वाला वर्णन किया।

इसके बाद, मैंने बच्चों को कुछ चुनिन्दा किताबों के चित्रों के आधार पर कहानियाँ लिखने के लिए प्रेरित किया। यह चित्र *बरखा* सीरीज़ की, *शरबत, मिली की साइकिल, ऊन का गोला, मिमी के लिए क्या लूँ?* और *पका आम* किताबों के थे। चित्रों को देखकर बच्चों ने अपने विचारों और भावनाओं को काग़ज़ पर उकेरा। एक बच्ची ने एक चित्र से प्रेरित होकर एक छोटे-से गाँव की कहानी लिखी जिसमें वह गाँव हर किसी के लिए एक सुरक्षित ठिकाना था। इस प्रक्रिया में, उन्हें अपनी कल्पनाशीलता को गहराई से व्यक्त करने का मौक़ा मिला।

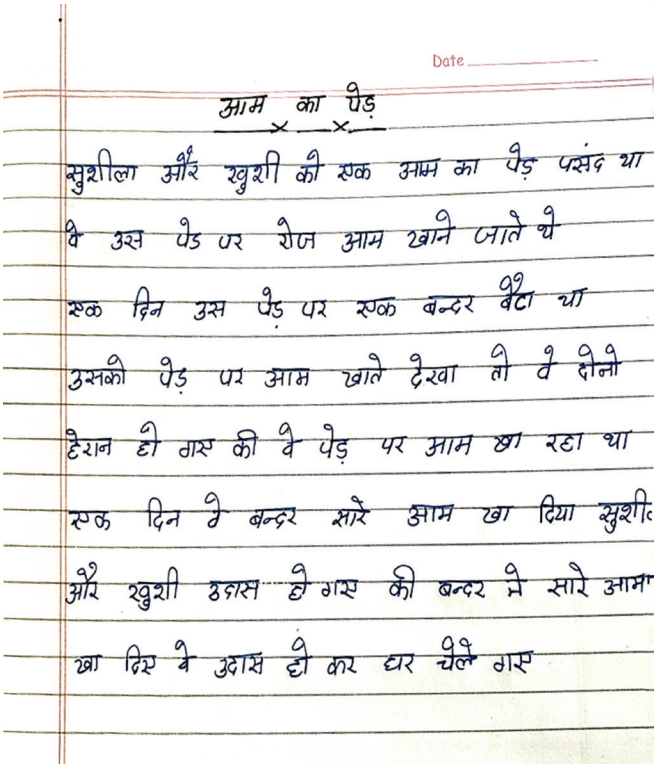
Date

आम का पेड़

सुशीला और खुशी की एक आम का पेड़ पसंद था
वे उस पेड़ पर रोज आम खाने जाते थे
एक दिन उस पेड़ पर एक बन्दर बैठा था
उसको पेड़ पर आम खाते देखा तो वे दोनो
हैरान हो गए की वे पेड़ पर आम खा रहा था
एक दिन वे बन्दर सारे आम खा दिया सुशी
और खुशी उदास हो गए की बन्दर ने सारे आम
खा दिए वे उदास हो कर घर चले गए

चित्र 2 : विद्यार्थी के काम का नमूना

कविता लेखन

जब मैं स्कूल विज़िट पर जाता, बच्चों को कविताएँ लिखने के लिए भी प्रेरित करता था। इसके लिए बच्चों को कुछ चित्र व शब्द दिए जाते थे। शुरुआत में, बादल, जंगल, मेला, नानी, दादी, खेल, पक्षी, आदि जैसे किसी शब्द पर सभी बच्चे मिलकर कविता की एक-एक पंक्ति ब्लैकबोर्ड पर सामूहिक रूप से बनाते थे, और फिर अपनी-अपनी कविताएँ नोटबुक में रचते थे। यह देखना दिलचस्प था कि कैसे बच्चों ने सरल शब्दों में अपनी भावनाओं को पंक्तियों में पिरोने की कोशिश की। कभी-कभी तो वह इतने उत्साहित हो जाते थे कि अपनी कविताओं को पूरी कक्षा में पढ़कर सुनाते। एक दिन, एक बच्चे ने अपनी कविता में एक पक्षी की स्वतंत्रता का वर्णन किया जो अपने पंख फैलाकर आकाश में उड़ता है। उसमें निहित सन्देश ने पूरी

कक्षा को प्रभावित किया। अलग-अलग विद्यालयों में बच्चों के इस सृजनात्मक पक्ष को देखकर मुझे तरह-तरह के अनुभव प्राप्त हुए।

दैनिक डायरी लेखन

विद्यालयों में विज़िट के दौरान यह अनुभव हुआ कि जो शिक्षक अपने विद्यालयों के बच्चों के साथ नियमित रूप से दैनिक डायरी लेखन पर कार्य कर रहे थे, उन बच्चों का लेखन अन्य बच्चों की तुलना में काफ़ी बेहतर था। अकादमिक सत्रों में शिक्षकों ने अपने विद्यालयों में दैनिक डायरी लेखन के प्रभावों के बारे में अपने दिलचस्प अनुभव रखे। इनमें प्राथमिक विद्यालय बैरांगना के शिक्षक महेशजी ने दैनिक डायरी के माध्यम से बच्चों के लेखन में आए सकारात्मक बदलावों के अनुभव साझा किए।

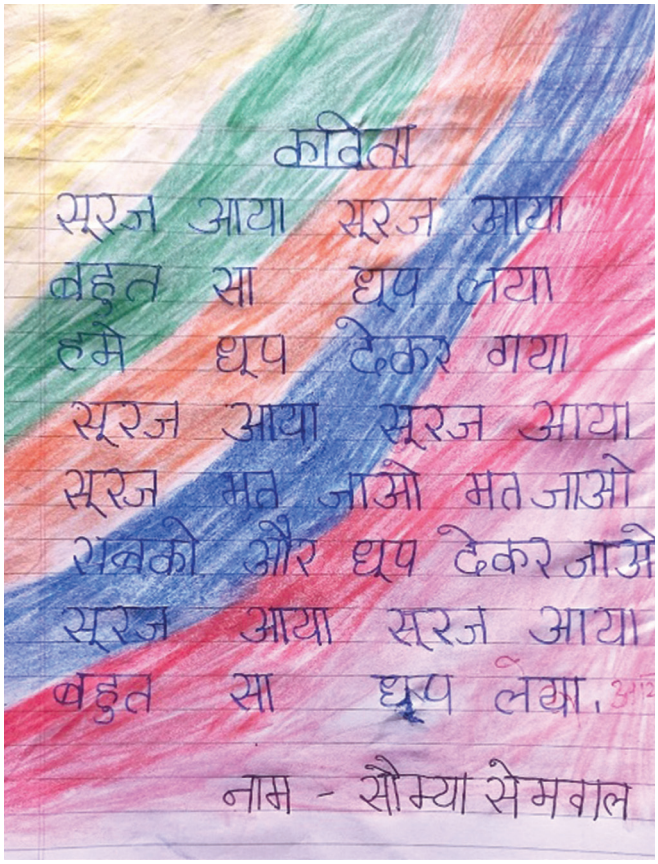

चित्र 3 : एक छात्रा द्वारा लिखी गई कविता

इसके बाद, मेरा महेशजी के विद्यालय जाना हुआ। वहाँ मैंने बच्चों से गाँव के समीप स्थित ट्राउट फ़िश के मछली पालन तालाबों पर उनके अनुभव लिखने को कहा। बच्चों ने अपनी कॉपी में मछली पालन की प्रक्रिया को स्पष्टता और गहराई के साथ अच्छे से दर्ज किया। यह दर्शाता है कि बच्चों ने इस अनुभव को न केवल समझा, बल्कि उसे अपने शब्दों में अच्छी तरह से व्यक्त भी किया। यह उनके अनुभवात्मक लेखन कौशल की प्रगति को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। इसलिए लेखन को बेहतर करने के लिए, मैं बच्चों में दैनिक डायरी लेखन को सबसे ऊपर रखता हूँ। जब मैंने विद्यार्थियों को दैनिक डायरी लेखन के अभ्यास के लिए प्रेरित किया तब मुझे नहीं पता था कि यह साधारण-सा अभ्यास उनके लेखन कौशल में इतना बड़ा सकारात्मक बदलाव ला सकता है। शिक्षकों ने भी इस बात से अवगत करवाया कि शुरू में कुछ बच्चों ने इसे एक और नीरस काम माना और कुछ को तो यह बिल्कुल ही नया और कठिन लगा। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, मैंने देखा कि यह अभ्यास उनके लेखन को सुधारने के साथ-साथ उनके आत्मविश्वास को भी बढ़ा रहा है। मैंने बच्चों को बताया कि डायरी लेखन का उद्देश्य महज़ रोज़ की घटनाओं का वर्णन करना नहीं है, बल्कि अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को शब्दों में व्यक्त करना है। यह उन्हें न केवल लेखन के लिए प्रेरित करता था, बल्कि उनकी सोचने की क्षमता और आत्मविश्लेषण की प्रक्रिया को भी बढ़ावा देता था।

बच्चों के लेखन की इस प्रक्रिया में यह देखने को मिला कि शुरू में उनका लेखन सरल और असंगत था, लेकिन जैसे-जैसे वह इसे रोज़ करते गए उनके शब्दों में गहराई आई। पहले जहाँ वह केवल 'आज मैंने क्या किया' लिखते थे, अब वह अपनी दिनचर्या से जुड़ी भावनाओं और अनुभवों पर भी लिखने लगे। उदाहरण के लिए, एक विद्यार्थी ने एक दिन लिखा, "आज मैंने अपने दोस्त से झगड़ा किया, लेकिन बाद में मुझे एहसास हुआ कि मैं ग़लत था। अब मैं अपनी ग़लती मानकर उससे माफ़ी माँगने की सोच रहा हूँ।" ऐसे विचारों का लिखना केवल लेखन को ही बेहतर नहीं बनाता, बल्कि बच्चों को अपने अनुभवों से सीखने का भी मौक़ा देता है। मैंने बच्चों को समझाया कि डायरी लेखन का अभ्यास न केवल उनकी वर्तनी और व्याकरण को सुधारेगा, बल्कि यह उनकी सोच और विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में भी मदद करेगा।

> **शिक्षकों का मुख्य उद्देश्य बच्चों को न केवल अकादमिक रूप से, बल्कि व्यक्तिगत रूप से भी विकसित करना होता है।**

डायरी लेखन ने बच्चों को आत्ममूल्यांकन की प्रक्रिया से भी जोड़ा। जब वह अपने दिन के बारे में सोचते और उसे लिखते तो उन्हें ख़ुद ही समझ में आता कि क्या अच्छा हुआ, और क्या सुधारने की ज़रूरत है। कई बच्चों ने यह महसूस किया कि डायरी में लिखने से उनके भीतर छिपी हुई भावनाएँ बाहर आती हैं जिससे वह अपनी परेशानियों और ख़ुशियों को बेहतर तरीक़े से समझ पाते हैं। डायरी लेखन केवल एक कक्षा का काम नहीं, बल्कि एक आदत बननी चाहिए।

मैंने बच्चों को प्रोत्साहित किया कि वह डायरी लेखन को एक रचनात्मक और व्यक्तिगत प्रक्रिया मानें, न कि महज़ एक स्कूल असाइनमेंट। उनके लेखन में अब आत्मविश्वास और परिपक्वता आ गई है। इस अनुभव ने मुझे यह सिखाया कि शिक्षकों का मुख्य उद्देश्य बच्चों को न केवल अकादमिक रूप से, बल्कि व्यक्तिगत रूप से भी विकसित करना होता है। दैनिक डायरी लेखन इसके लिए एक बेहद प्रभावी तरीक़ा हो सकता है।

समस्याएँ और समझ का तालमेल

शुरुआत में ज़्यादातर बच्चों का दैनिक डायरी लेखन नीरस था। उनके लेखन को समझने में कठिनाई होती थी। कई बच्चों ने इसे अतिरिक्त और उबाऊ काम माना जिससे शुरुआत में उन्हें लिखने में कठिनाई हुई। बच्चों का आरम्भिक लेखन बहुत सरल और असंगत था। वह केवल रोज़ की घटनाओं का वर्णन करते जिनमें गहरी सोच या भावनाओं की कमी दिखाई देती थी। उनके लेखन में वर्तनी और वाक्य संरचना की ग़लतियाँ सामान्य थीं, और भाषा में प्रवाह की भी कमी थी। लेकिन बच्चों के साथ निरन्तर काम करते-करते उनके लेखन में धीरे-धीरे सुधार हुआ। यह दर्शाता है कि लगातार अभ्यास और प्रोत्साहन से ही उनकी सोच और लेखन में गहराई आई। मुझे समझ में आया कि समस्याओं के लिए तैयार रहना होगा, संयम रखना होगा, और बेहतर नतीजों के लिए इन्तज़ार भी करना होगा।

मुझे यह महसूस हुआ कि रचनात्मक लेखन बच्चों के समग्र विकास के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इससे उन्हें न केवल भाषा और अभिव्यक्ति के कौशल में सुधार करने का अवसर मिलता है, बल्कि उनकी कल्पनाशक्ति, आत्मविश्वास और समस्या सुलझाने की क्षमता को भी बढ़ावा मिलता है। सन्दर्भ व्यक्ति के रूप में काम करते हुए मुझे यह समझ में आया कि लिखना सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों को केवल शुद्ध लेखन, व्याकरण या वर्तनी के बारे में सिखाना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनके रचनात्मक दृष्टिकोण को विकसित करने का भी उतना ही महत्त्व है। बच्चों को अपनी रचनात्मकता को प्रकट करने के लिए सही वातावरण और प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है। इसके लिए शिक्षक का सकारात्मक दृष्टिकोण और बच्चों को अवसर देना बेहद महत्त्वपूर्ण होता है।

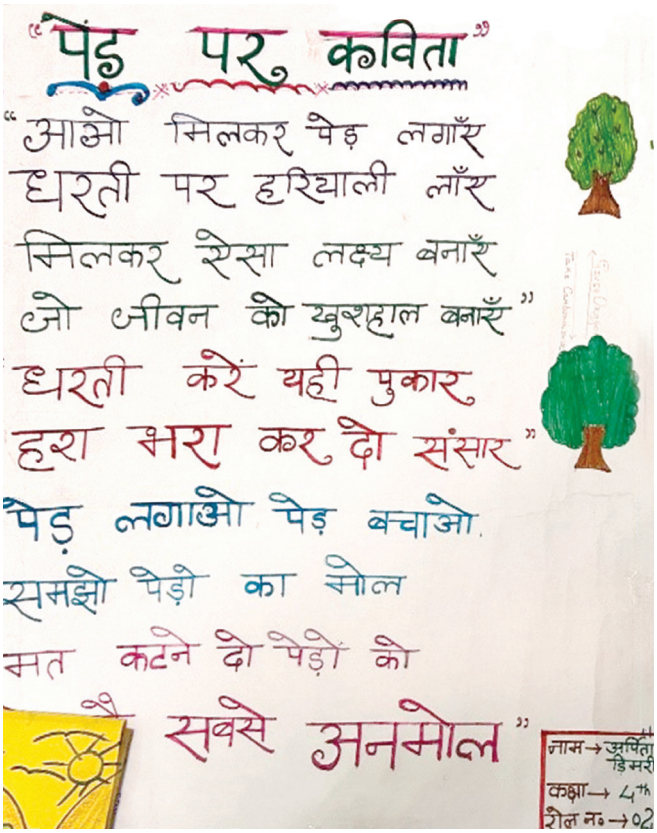

चित्र 4 : एक छात्रा द्वारा लिखी गई कविता का नमूना

सन्दर्भ

अभिव्यक्ति और माध्यम, 'सृजनात्मक लेखन' कक्षा 11-12 के लिए हिन्दी (आधार और ऐच्छिक पाठ्यक्रम) की पाठ्यपुस्तक, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

प्राथमिक कक्षाओं में हिन्दी भाषा शिक्षण हैंडबुक, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन

नेशनल अचीवमेंट सर्वे 2021, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

बरखा सीरीज़, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

विवेक सोनी ने हिन्दी व अँग्रेज़ी भाषा शिक्षणशास्त्र का अध्ययन किया है। आप पिछले 16 सालों से भाषा व शिक्षक शिक्षा के अध्ययन, शोध कार्यों से जुड़े हुए हैं। वर्तमान में, आप अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन चमोली, उत्तराखण्ड में सन्दर्भ व्यक्ति के रूप में काम कर रहे हैं।

सम्पर्क : vivek.soni@azimpremjifoundation.org